जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

व्यक्तिविशेष की महिमा से सम्प्रदाय पनपते हैं और गुणों की महिमा से धर्म की वृद्धि होती है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ : 6

वर्ष : 26, अंक : 20 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जनवरी (द्वितीय) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

द्रोणगिरि (छतरपुर-म.प्र.) : श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 2003 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के सहयोग से आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के समयसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। साथ ही पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ़, पण्डित शीतलजी शास्त्री नौगाँव एवं पण्डित गुलाबचन्दजी जैन भोपाल आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ भी समाज को मिला।

इस अवसर पर दिनांक 28 दिसम्बर, 2003 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता फैडरेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अखिलजी बंसल जयपुर ने की तथा मुख्य अतिथि श्री संदीपजी सौगाणी भोपाल, विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्रभानजी जैन घुवारा, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी तथा फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर थे। इनके अतिरिक्त इन्जी. विनोदजी निरखे मलकापुर, इन्जी. सुनीलजी बड़कुल छतरपुर, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री बरायठा, पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर आदि भी मंचासीन थे।

अधिवेशन में राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने फैडरेशन की गतिविधियों का विस्तार से परिचय दिया एवं श्री अखिलजी बंसल ने अपने उद्बोधन में नवयुवकों को फैडरेशन से जुडने की प्रेरणा देते हुये संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

(शेष पृष्ठ 4 पर .....)

जैनधर्म के व्याख्यान अब अहिंसा चैनल पर भी

सैटेलाइट जगत में जैनसमाज के धर्मलाभार्थ गाँधी जयन्ति के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2003 से अहिंसा चैनल (फ्री टू एयर चैनल) का प्रसारण प्रारंभ हो चुका है, जिसपर जैनधर्म के अहिंसा, शाकाहार, अनेकान्तवाद आदि विविध विषयों पर मुनिश्री क्षमासागरजी(सायं 7 बजे), आचार्य महाप्रज्ञजी आदि अनेक साधुसंतों तथा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। इस चैनल का प्रसारण 24 घंटे होता है।

वर्तमान में यह चैनल 15 राज्यों के पटना, दरभंगा, गिरिडीह, राची, कोलकाता, पानीपत, फरीदाबाद, हिसार, दिल्ली, लुधियाना, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, ललितपुर, फिरोजाबाद, देहरादून, गाजियाबाद, हरिद्वार, कानपुर, कासगंज, अलीगढ़, लखनऊ, मथुरा, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, नोएडा, सहारनपुर, मेरठ, वाराणसी, ऋषिकेष, बिलासपुर, जगदलपुर, भिलाई, दुर्ग, अहमदाबाद, भटींड़ा, वापी, भुसावल, लातूर, मुम्बई, भोपाल, हरदा, होशंगाबाद, इन्दौर, कटनी, नरसिंहपुर, नीमच, रायसेन, रतलाम, सागर, सतना, सीहोर, शहडोल, विदिशा आदि अनेक स्थानों पर लाखों परिवारों द्वारा देखा जा रहा है।

जिन स्थानों पर ये चैनल नहीं आ रहा है, वे अपने केबल ऑपरेटर को निम्न सूचना देकर प्रारम्भ करा सकते हैं। इस चैनल का कोई चार्ज नहीं लगता; यह निःशुल्क चैनल है।

Satellite	:	INSAT (Expanded Coverage 93.5^{0}E)
Polarisation	:	Vertical
Downlink Prequcney	:	3915.5 MHz-3920.0 MHz
FEC	:	3/4
Symbol Rate	:	3030 KSPS

किसी भी सूचना/समस्या के समाधान हेतु निम्न पते पर संपर्क करें -

A.T.N. इन्टरनेशनल लिमिटेड,
10, प्रिसेप स्ट्रीट IInd फ्लोर, कोलकाता ह्न 32
फोन : 033-22256851-52, फैक्स : 22379053
Email : info@ahimsaatv.com, Website : www ahimsaatv.com

नोट : ज्ञातव्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8.30 से 9.00 बजे** तक प्रसारित हो रहे हैं।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

1

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

पृष्ठभूमि

अध्यात्म के प्रतिष्ठापक आचार्य कुन्दकुन्द का स्थान दिगम्बर आचार्य परम्परा में सर्वोपरि है। भगवान महावीर और गौतम गणधर के बाद समग्र आचार्य परम्परा में एकमात्र आचार्य कुन्दकुन्द को ही नामोल्लेखपूर्वक स्मरण किया गया है। परवर्ती ग्रन्थकारों ने आपको जिस श्रद्धा से स्मरण किया है, उससे भी यह पता चलता है कि दिगम्बर जैन परम्परा में कुन्द-कुन्द का स्थान बेजोड़ है।

निम्नांकित छन्द से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है ह्न

मंगल भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं।।

चन्द्रगिरि, विन्ध्यगिरि के शिलालेखों से; नन्दिसंघ पट्टावली एवं जैन शिलालेख संग्रह आदि में प्राप्त उल्लेखों से ज्ञात होता है कि आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व विक्रम की प्रथम शताब्दि में कौन्दकुन्दपुर (कर्नाटक) में जन्मे कुन्दकुन्द अखिल भारतवर्षीय ख्याति के दिग्गज आचार्य हो गये हैं। आचार्य कुन्दकुन्द को चारणऋद्धि प्राप्त थी तथा उनका प्रथम नाम पद्मनन्दी था। कौन्डकुन्दपुर के वासी होने से उनका कुन्दकुन्द नाम प्रचलित हुआ।

कहा जाता है कि एकबार आचार्य कुन्दकुन्द को बहुत गहराई से चिन्तन करने पर भी कोई विषय स्पष्ट समझ में नहीं आ रहा था, उसी चिन्तन में डूबे कुन्दकुन्द ने विदेहक्षेत्र में विद्यमान तीर्थंकर सीमन्धर स्वामी को परोक्षनमन किया। उनके नमन के निमित्त से सीमन्धर स्वामी की दिव्यवाणी में सहज ही उनके लिए आशीर्वचन प्रस्फुटित हो गया। जिसे सुनकर वहाँ उपस्थित दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों के मन में यह शंका हुई कि सीमन्धर स्वामी की दिव्यध्वनि के बीच में यह आशीर्वचन किसको और क्यों? और तीर्थंकर प्रकृति के अतिशय से उनका तुरन्त ही समाधान भी हो गया। तदनुसार धर्मस्नेह से प्रेरित होकर वे आचार्य कुन्दकुन्द को आकाशमार्ग से विदेह क्षेत्र में विराजमान सीमन्धर स्वामी के समोशरण में ले गये। वहाँ से लौटकर आचार्य कुन्दकुन्द ने 84 पाहुड़ों की रचना की। इन्हीं 84 पाहुड़ों में से 'पंचास्तिकाय संग्रह' एक पाहुड़ है। यद्यपि इसमें पंच अस्तिकाय द्रव्यों की मुख्यता से कथन किया गया है, इसकारण इसका नाम पंचास्तिकाय है, फिर भी गौणरूप से उसकाल द्रव्य की भी चर्चा है, जो अस्तिकाय नहीं है।

इस ग्रन्थ पर तात्पर्यवृत्ति नामक टीका लिखने वाले टीकाकार आचार्य जयसेन यह लिखते हैं कि – ''कुन्दकुन्दाचार्य ने विदेह क्षेत्र में जाकर वीतराग सर्वज्ञ विद्यमान अर्हन्त परमात्मा सीमन्धर स्वामी की साक्षात् दिव्यध्वनि सुनकर, समवशरण में उपस्थित रहकर उनकी दिव्यवाणी द्वारा शुद्धात्मतत्व और वस्तुस्वातंत्र्य जैसे सिद्धान्तों को सुना और उनसे महिमा मण्डित होकर वे वहाँ से लौटकर भरत क्षेत्र में आये। यहाँ भव्य जीवों के भाग्योदय और हम सबकी भली होनहार से उन्हें ऐसा लगा, ऐसा विकल्प आया कि जो निधि मुझे प्राप्त हुई है, क्यों न उसे सुपात्र पाठकों तक पहुँचाई जाये।

यद्यपि वे जागृत विवेक एवं दृढ़ श्रद्धा से यह जानते और मानते थे कि ह्न ''मैं इसका कर्त्ता नहीं हूँ; फिर भी भूमिकानुसार विकल्प आये बिना नहीं रहता।'' ऐसा ही कुछ उनके साथ हुआ और उनके द्वारा 1-2 नहीं, बल्कि 84 पाहुड़ों की रचना हो गई।

विश्वव्यवस्था और वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त जिनअध्यात्म और जैनदर्शन का प्राण है। जिनागम में विविध आयामों से जो कुछ भी कहा गया है, सबका मूल आधार विश्वव्यवस्था के अन्तर्गत स्वतः परिणमित छह द्रव्य, सात तत्व और नव पदार्थ ही हैं। यही जैनदर्शन का सार है। यही पंचास्तिकाय संग्रह ग्रन्थ की पूर्ण विषयवस्तु है। इन्हें जाने बिना प्रवचनसार और समयसार जैसे गंभीर ग्रन्थों की विषय वस्तु भी समझ में नहीं आ सकती। एतदर्थ पंचास्तिकाय ग्रन्थ का अध्ययन अति आवश्यक है।

इस ग्रन्थ में प्रतिपादित अनादिनिधन स्वसंचालित विश्व-व्यवस्था के अन्तर्गत कराया गया छह द्रव्यों के स्वरूप का ज्ञान वह संजीवनी है, जो जैनदर्शन के प्राणभूत वस्तुस्वातंत्र्य को एवं स्वसंचालित विश्व-व्यवस्था को जीवनदान देती है। अतः यह ग्रन्थ सर्वप्रथम स्वाध्याय करने योग्य है। इसकी प्राथमिक जानकारी के बिना जिन अध्यात्म और जैनदर्शन में प्रवेश पाना ही संभव नहीं है।

यद्यपि मूल ग्रन्थ की विषयवस्तु बुद्धिगम्य है, संक्षिप्त है, सरल है; सामान्य स्वाध्यायी प्रायः इनकी परिभाषाओं से परिचित भी होते हैं; परन्तु यह विषय अत्यन्त सूक्ष्म है, इसकारण इसे समझने के लिए बुद्धि का पैनापन तो अपेक्षित है ही, कर्त्ताबुद्धि आदि के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर अपने मन-मस्तिष्क को कोरे कागज की तरह साफ सुथरा रखकर गंभीरतापूर्वक श्रद्धा से समझना अति आवश्यक है।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव स्वयं इस संदर्भ में इस पंचास्तिकाय ग्रन्थ की अन्तिम गाथा (173) में कहते हैं कि ''जिनप्रवचन के सारभूत इस पंचास्तिकाय संग्रह सूत्र को मेरे द्वारा मार्ग की प्रभावना हेतु जिनप्रवचन की भक्ति से प्रेरित होकर ही कहा गया है।''

उपर्युक्त गाथा 173 की टीका में आचार्य अमृतचन्द्र इस बात को

और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न ''परमागम के अनुराग के वेग से चलायमान मनवाले मुझ कुन्दकुन्द द्वारा भगवान सर्वज्ञ द्वारा कहा गया और समस्त वस्तुतत्व का सूचक होने से अत्यन्त विस्तृत जिनप्रवचन का सार भूत यह पंचास्तिकाय संग्रह नामक सूत्र ग्रन्थ संक्षेप में कहा गया है।''

इस ग्रन्थ के स्पष्ट रूप से दो खण्ड हैं; जिन्हें 'समयव्याख्या' नामक टीका में आचार्य अमृतचन्द्र 'श्रुतस्कन्ध' नाम से अभिहित करते हैं।

''प्रथम श्रुतस्कन्ध में षट्द्रव्य-पंचास्तिकाय का वर्णन है और द्वितीय श्रुतस्कन्ध में नवपदार्थ पूर्वक मोक्षमार्ग का निरूपण है।''

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि आचार्य अमृतचन्द्र और आचार्य जयसेन जैसे सूक्ष्मदर्शी दो-दो समर्थ टीकाकार जिसकी टीका लिखने के लोभ का संवरण नहीं कर पाये, उस कुन्दकुन्द के मूल प्रतिपाद्य में कुछ विशेषतायें तो होंगी ही, जिन्हें लिखकर टीकाकार द्वय ने पाठकों का मार्ग सुगम किया है।

प्रस्तुत पंचास्तिकाय संग्रह ग्रन्थ में शिवकुमार आदि संक्षेप रुचि वाले प्राथमिक शिष्यों को समझने के लिए मोक्षमार्ग मूलक पाँच अस्तिकायों, छहद्रव्यों, सात तत्त्वों एवं नौ पदार्थों का विवेचन किया गया है।

'प्रस्तुत पंचास्तिकाय संग्रह' ग्रन्थ पर दो टीकायें उपलब्ध हैं ह्न एक आचार्य अमृतचन्द्र की 'समयव्याख्या' टीका तथा दूसरी आचार्य जयसेन की 'तात्पर्यवृत्ति' टीका। इन्होंने अपनी टीकाओं में विस्तार से ग्रन्थ का मर्म खोला है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने पंचास्तिकाय को दो श्रुतस्कन्धों में विभाजित किया है, जिसके पूर्व में पीठिका और अन्त में चूलिका है। आचार्य अमृतचन्द्र की टीका के अनुसार 173 गाथायें हैं तथा आचार्य जयसेन की टीका के अनुसार 181 गाथायें हैं। यहाँ दो स्कन्धों से तात्पर्य दो अलग-अलग प्रकार से विभाजित विषय से हैं। इनसे एक--दूसरे को समझने में सहायता मिलती है।

आचार्य जयसेन की टीकाओं में जो 8 गाथायें आचार्य अमृतचन्द्र की टीका से अधिक हैं, वे प्रथम अधिकार में जीवास्तिकाय के वर्णन में गाथा क्रमांक 43 के बाद 6 गाथायें हैं तथा पुद्गलास्तिकाय के वर्णन में गाथा क्रमांक 76 के बाद 1 तथा द्वितीय अधिकार में व्यवहाररत्नत्रय के स्वरूप वर्णन में गाथा क्रमांक 106 के बाद 1 गाथा आई है।

इस ग्रन्थ के स्पष्ट रूप से दो खण्ड हैं, जिन्हें समय व्याख्या टीकायें आचार्य अमृतचन्द ने प्रथम श्रुतस्कन्ध एवं द्वितीय श्रुतस्कन्ध नाम दिया है। प्रथमखण्ड में द्रव्य स्वरूप के प्रतिपादन द्वारा शुद्ध तत्व का उपदेश दिया है और द्वितीय खण्ड पदार्थ भेद द्वारा प्रारंभ करके उस शुद्धात्म तत्व की प्राप्ति का मार्ग दिखाया है। इसप्रकार प्रथम खण्ड के प्रतिपादन का उद्देश्य शुद्धात्मतत्व का सम्यक्ज्ञान कराना हैं और दूसरे खण्ड के प्रतिपादन का उद्देश्य पदार्थ विज्ञानपूर्वक मुक्ति का मार्ग अर्थात् शुद्धात्मतत्व की प्राप्ति का मार्ग दर्शाता है।

उक्त दोनों खण्ड इतने विभक्त हैं कि दो स्वतंत्र ग्रन्थ से प्रतीत होते हैं। दोनों के एक जैसे स्वतंत्र मंगलाचरण किये गये हैं। प्रथमखण्ड समाप्त करते हुए उपसंहार भी इसप्रकार कर दिया गया है कि जैसे ग्रन्थ समाप्त ही हो गया हो। प्रथम खण्ड की समाप्ति पर ग्रन्थ के अध्ययन का फल भी निर्दिष्ट कर दिया गया है। दूसरा खण्ड इसप्रकार आरम्भ किया गया है, मानो ग्रन्थ का ही आरम्भ हो रहा है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने 'समयव्याख्या' नामक टीका के मंगलाचरण के साथ ही तीन श्लोकों द्वारा पंचास्तिकायसंग्रह के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कर दिया है, जो कि इसप्रकार है :ह्न

पंचास्तिकायषड्द्रव्यप्रकारेण प्ररूपणम्।
पूर्वं मूलपदार्थानामिह सूत्रकृताकृतम्।।४।।
जीवाजीवद्विपर्यायरूपाणां चित्रवर्त्मनाम्।
ततो नवपदार्थानां व्यवस्था प्रतिपादिता।।५।।
ततस्तत्त्वपरिज्ञानपूर्वेण त्रितयात्मना।
प्रोक्ता मार्गेण कल्याणी मोक्षप्राप्तिरपश्चिमा।।६।।

यहाँ सबसे पहले सूत्रकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द देव ने मूलपदार्थों का पंचास्तिकाय एवं षड्द्रव्य के रूप में निरूपण किया है।

इसके बाद दूसरे खण्ड में जीव और अजीव ह्न इन दो की पर्यायों रूप नव पदार्थों की विभिन्न प्रकार की व्याख्या का प्रतिपादन किया है।

इसके बाद दूसरे खण्ड के अन्त में चूलिका के रूप में तत्त्व के परिज्ञानपूर्वक (पंचास्तिकाय, षट्द्रव्य एवं नवपदार्थों के यथार्थ ज्ञानपूर्वक) त्रयात्मक मार्ग से (सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र की एकता से) कल्याणस्वरूप उत्तम मोक्षप्राप्ति कही है।''

तात्पर्यवृत्तिकार आचार्य जयसेन इस ग्रन्थ को तीन महा-अधिकारों में विभक्त करते हैं। आचार्य जयसेन द्वारा विभाजित प्रथम महा-अधिकार तो आचार्य अमृतचन्द्र द्वारा विभाजित प्रथम श्रुतस्कन्ध के अनुसार ही है। अमृतचन्द्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध को जयसेनाचार्य ने द्वितीय एवं तृतीय ऐसे दो महाधिकारों में विभक्त कर दिया है। उसमें भी कोई विशेष बात नहीं है। बात मात्र इतनी ही है कि जिसे अमृतचन्द्र 'मोक्षमार्गप्रपञ्चचूलिका' कहते हैं, उसे ही जयसेनाचार्य तृतीय महा-अधिकार कहते हैं। **(क्रमश:)**

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

सुसनेर (म.प्र.): यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2003 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर तथा रत्नत्रय मण्डल विधान अत्यन्त सानन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: एवं रात्रि में पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन के समयसार ग्रन्थ पर एवं पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुए। दोपहर में पण्डित नागेशजी जैन, पिडावा के निर्देशन में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित नेमिचन्दजी जैन पिडावा के समयसार ग्रन्थ पर प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित नागेशजी जैन पिडावा एवं पण्डित शांतिलालजी जैन महिदपुरवालों के प्रवचन का लाभ भी स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

सायंकाल पण्डित रवि जैन पिडावा द्वारा बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम के आयोजनकर्त्ता श्री केसरीसिंहजी पाण्डे, सुसनेर थे। **ह्न रवि जैन, पिड़ावा**

(पृष्ठ 1 का शेष .....)

डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी ने फैडरेशन के कार्यकलापों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। संगठन को मजबूत बनाने हेतु पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री को संगठन मंत्री का दायित्व सौंपा गया तथा श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा निकट भविष्य में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शीघ्र ही अनेक उत्साही कार्यकर्ताओं का समावेश करने की ओर इशारा किया गया।

अधिवेशन में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की सिद्धायतन, शाहगढ़, जबलपुर, ललितपुर, गुना, कोलारस, रायपुर आदि विभिन्न शाखाओं से आये प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी वार्षिक रिपोर्ट एवं विचार प्रस्तुत किए।

इसी प्रसंग पर तीन वर्ष के लिये बुन्देलखण्ड प्रान्तीय प्रथम कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसके समस्त पदाधिकारियों को श्री अखिलजी बंसल जयपुर ने शपथ ग्रहण कराई। जिसमें **परामर्शदाता** श्री अरुणजी मोदी सागर, श्री सुधीरजी सहयोगी एवं श्री सन्तोषजी सागर, **संरक्षक** श्री गुलाबचन्दजी जैन सुभाष ट्रांस्पोर्ट, श्री मुन्नालालजी जैन ललितपुर एवं श्री अनुपजी नजा ललितपुर तथा **अध्यक्ष** श्री वीरेन्द्रजी कठरिया बीना, **मंत्री** राकेश जैन ललितपुर, **उपमंत्री** श्री प्रद्युम्न जैन बड़ामलहरा, **प्रचार मंत्री** संजय जैन शाहगढ़, संतोष जैन फुटेरा एवं **कोषाध्यक्ष** माधवप्रसादजी शास्त्री शाहगढ़ को नियुक्त किया गया, नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम मीटिंग सागर में पण्डित अरुणजी मोदी के निवास स्थान पर रविवार दिनांक 25 जनवरी 2004 को आयोजित की जायेगी।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया। मंगलाचरण पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं आभार प्रदर्शन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री रतनलालजी सौगाणी परिवार भोपाल द्वारा 64 ऋद्धि विधान का आयोजन भी किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये। शिविर का उद्घाटन श्री आलोककुमारजी जैन कानपुर ने किया। शिविर में लगभग 600-700 लोगों ने धर्मलाभ लिया। **– मस्ताई प्रेमचन्द जैन(मन्त्री)**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

पोन्नूरमलई (तमिलनाडु): यहाँ पर दिनांक 30 दिसम्बर, 2003 से 1 जनवरी, 2004 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूजन के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के टेप प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. हेमचन्दजी हेम देवलाली, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि विद्वानों के समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला आदि विषयों पर प्रवचन, कक्षा एवं तत्त्वचर्चा का लाभ आगन्तुक एवं स्थानीय मुमुक्षुओं को प्राप्त हुआ।

क्षेत्रिय विद्वानों में पण्डित जम्बूप्रसादजी शास्त्री, पण्डित उमापतीजी शास्त्री, पण्डित सुहासजी शास्त्री एवं पण्डित पारसनाथजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

सभी कार्यक्रम ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियाधांना के प्रतिष्ठाचार्यत्व तथा पण्डित हेमन्तभाई गांधी के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुये।

प्रतिदिन रात्रि में राजकोट एवं अलीगढ के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन अनंतभाई एवं निमेशभाई परिवार, मुम्बई द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्थानीय एवं आगन्तुक लगभग 5 हजार लोगों ने धर्मलाभ लिया। **ह्न बी.जी.श्रीपाल**

रतलाम में धर्मप्रभावना

रतलाम : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सागोदिया में पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा, उज्जैन के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हाथीवाला में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका एवं छहढाला ग्रन्थ पर नियमित रूप से प्रवचन चल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल में पाठशाला एवं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन भी पण्डितजी द्वारा उत्साहपूर्वक किया जा रहा है, जिसमें स्थानीय महिलाएँ, युवा एवं प्रौढवर्ग अत्यधिक संख्या में उपस्थित होकर लाभान्वित हो रहा हैं। **ह्न जम्बूकुमार पाटोदी**

लघु शिविरों द्वारा कर्नाटक में धर्मप्रभावना

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातकपण्डित राजेन्द्रकुमारजी पाटील शास्त्री, एलिमुन्नोली द्वारा कर्नाटक प्रान्त के विभिन्न स्थानों पर लघु शिविरों का आयोजन कर समाज को जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराया गया।

आपने दिनांक 9 नवम्बर, 2003 से 5 जनवरी, 2004 तक मंगलौर, मण्ड्या, मुरुकणहल्ली, बावन्तबिट्टु, होलबगेरे, बंगाडी, पुत्तूरु, गुरूवायनकेरे, बेलतंगडी, पुरुषगड्डे, हुणसेगुंड, उजिरे, बी. सी. रोड, कडदरहल्ली, अडगुरु, हलेबिडु, तेलेकुणी, एलिमुन्नोली, कोन्नूर, कबंदहल्ली, हासन, सवनालु, जांबले, पेलेनिरु तथा कदुरेमुख आदि स्थानों पर आपके द्वारा क्रमश: ये शिविर आयोजित किये गये।

इन सभी स्थानों पर पूजन, मोक्षमार्ग प्रकाशक, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, समयसार आदि ग्रंथों पर प्रवचन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **ह्न श्रीमन्त नेज**

सांस्कृतिक सप्ताह सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में नववर्ष के शुभअवसर पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु दिनांक 1 जनवरी से 8 जनवरी 2004 तक सांस्कृतिक सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

जिसमें **दिनांक 1 जनवरी** को मिस्टर स्मारक प्रतियोगिता में अभिषेक जैन, सिलवानी ने प्रथम एवं दीपेश जैन, गुढा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

2 जनवरी को 'कार्य निमित्त से या उपादान से ?' विषय पर उपाध्याय वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता में पक्ष से अंकुर जैन ने प्रथम एवं संतोष जैन, बक्स्वाहा ने द्वितीय तथा विपक्ष से कु. परिणती पाटील ने प्रथम एवं राहुल जैन, अलवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

3 जनवरी को भजन प्रतियोगिता में कु. परिणती पाटील जयपुर, निखिल जैन कोतमा एवं सुनील बेलोकर सुलतानपुर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

4 जनवरी को अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अमित जैन एवं जितेन्द्र यादव, द्वितीय स्थान अभिषेक जैन एवं अनुपम जैन तथा तृतीय स्थान रोहन जैन एवं अनुज जैन ने प्राप्त किया।

५ जनवरी को 'विश्वशांति अहिंसा से या हिंसा से ?' विषय पर शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता में पक्ष से अभिषेक जैन सिलवानी ने प्रथम एवं जितेन्द्र यादव बानपुर ने द्वितीय तथा विपक्ष से जितेन्द्र चौगुले ने प्रथम एवं वरूण शाह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

6 जनवरी को कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम ज्ञायक जैन राजकोट, द्वितीय आशीष जैन जबेरा एवं रविन्द्र काले कारंजा तथा तृतीय राहुल जैन एवं अर्पित जैन बडामलहरा रहें।

7 जनवरी को श्लोक-पाठ प्रतियोगिता में अभिषेक जैन सिलवानी एवं आदित्य जैन खुरई ने क्रमश: प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा राहुल जैन अलवर एवं दीपेश जैन गुढा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

8 जनवरी को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से राहुल जैन अलवर, कु. परिणति पाटील जयपुर एवं प्रसन्न शेटे कोल्हापुर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। तथा शास्त्री वर्ग से दीपेश जैन गुढा ने प्रथम, अभिषेक जैन सिलवानी व संभव जैन नैनधरा ने द्वितीय तथा आदित्य जैन खुरई ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इससे पूर्व **दिनांक 25 दिसम्बर से दिनांक 31 दिसम्बर 2003** तक विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत **क्रिकेट प्रतियोगिता** में उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा की कहान टीम विजेता रही एवं शास्त्री तृतीय वर्ष की स्वस्तिक टीम उपविजेता रही। **बैडमिंटन प्रतियोगिता** एकल में प्रथम स्वतंत्र जैन एवं द्वितीय विमोश जैन तथा डबल में अभय जैन एवं विमोश जैन ने प्रथम तथा अंकित जैन एवं अनेकान्त भारिल्ल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **कैरम प्रतियोगिता** एकल में विमोश जैन ने प्रथम एवं विकास जैन ने द्वितीय तथा डबल में सोनल जैन एवं धीरज जैन ने प्रथम तथा चेतन जैन एवं विकास जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **शतरंज प्रतियोगिता** में आकाश जैन एवं दीपक अथणे ने क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **दौड प्रतियोगिता** में अभय जैन, रोहन रोटे, संभव जैन विजेता रहे।

अन्त मे दिनांक 14 जनवरी को समस्त विजेता छात्रों को पुरस्कृत कर उनका अभिनंदन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा किया गया।

ह्न नीरज जैन, सौरभ जैन, पंकज जैन (मुख्य संयोजक)

पाठशाला निरीक्षण सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.): सम्पूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में संचालित श्री वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं का निरीक्षण श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के शास्त्री विद्वानों द्वारा अत्यन्त सफलतापूर्वक किया गया।

जिसमें घिरोर, द्रोणगिरि, उदयपुर, शिरडवाड, फलटण, मुगंला, रिठद, डासाला, खामगाँव, दिल्ली आदि अनेक स्थानों पर नवीन पाठशालाएँ प्रारंभ की गई तथा सभी स्थानों पर विद्वानों द्वारा पूजन, प्रवचन के पश्चात् कक्षाओं के सन्दर्भ में मार्गदर्शन दिये गये। जिससे उत्साहित होकर बालको ने श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर की शीतकालीन परीक्षाओं में भाग लेने हेतु प्रवेशफार्म भी भरकर भेजे। जिसमें ह्न

1. पण्डित अनीलकुमारजी जैन खनियाधांना द्वारा मध्यप्रदेश प्रान्त के बीना, गंजबासौदा, भोपाल, देहगाँव, गौरझामर, बरा, दलपतपुर, बिनैका, सीरोन्ज, द्रोणगिरि आदि स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

2. पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, नागपुर के द्वारा राजस्थान प्रान्त के उदयपुर, भीण्डर, अरथूना, घाटोल, डडूका, कलिंजरा, आंजना तथा महाराष्ट्र प्रान्त के पुणे, भिगवण, अकलूज, नातेपुते, फलटण एवं शिरडवाड आदि स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

3. पण्डित सन्तोषकुमारजी सावजी अंबड द्वारा उत्तरप्रदेश प्रान्त के घिरोर, भोगाँव, कुर्राचितपुर, करहल, मैनपुरी, फिरोजाबाद आदि स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

4. पण्डित प्रशान्तकुमारजी मोहरे सोलापुर द्वारा महाराष्ट्र प्रान्त के खामगाँव, मलकापुर, बुलढ़ाणा, औरंगाबाद, डोणगाँव, रिठद, वाशिम, डासाला, चिखली,कन्नड, हिंगोली आदि स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक : परीक्षा विभाग**

पुण्यस्मृति में प्राप्त दानराशियाँ

1. स्व. श्रीमती भगवती देवी धर्मपत्नी पण्डित श्री मदनलालजी पालीवाल की पुण्यस्मृति में श्री हुकमचन्दजी ओंकारदासजी जैन के द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 502/- रुपये प्राप्त हुए।

२. स्व. पण्डित चुन्नीलालजी शास्त्री, चन्देरी की प्रथम पुण्यतिथि (दिनांक 6 फरवरी 04) पर श्रीमती हीराबाई जैन पारमार्थिक ट्रस्ट की ओरसे जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 200/- रुपये प्राप्त हुए ।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो यही मंगल भावना है।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 83

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इस ज्ञाता–ज्ञेय के सन्दर्भ में प्रमुख दो बिन्दु हैं, जिनका ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

पहला तो यह कि इस संबंध को निषेध करने के बहाने, आत्मा के ज्ञानस्वभाव का निषेध नहीं करना।

दूसरा बिन्दु यह है कि पर को जानने को अपना स्वभाव या अधिकार मानकर पर को जानने में अपना सम्पूर्ण समय नष्ट नहीं करना।

परपदार्थों को जानना गलत नहीं है, किन्तु परपदार्थों को लगातार रसपूर्वक जानने में हानि अवश्य है। कोई खूबसूरत महिला सड़क पर जा रही हो और आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हो तो उस महिला को देखना चाहिए कि नहीं?

यदि उस महिला को नहीं देखोगे तो भी एक्सीडेन्ट हो जायेगा और उसे रसपूर्वक निरन्तर देखते रहोगे, तब भी एक्सीडेन्ट हो जायेगा। उस महिला के प्रति रागात्मक विकल्प खड़ा किए बिना ही सामान्यरूप से देखकर उसके बगल से निकल जाने में ही भलाई है।

उसीप्रकार निषेध न तो जानने का है और न ही नहीं जानने का है। यदि सहजता में जानने में आए तो जानना, अन्यथा नहीं जानना। यदि जानने से राग, एकत्व–ममत्व आदि उत्पन्न हो जाता है तो उन रागादि को रोकने के लिए कभी–कभी देखने–जानने का भी निषेध किया जाता है।

जैसे कोई बालक पड़ौसी के घर जाकर तोड़–फोड़ करे या पड़ौसी के बच्चे से लड़े तो उसकी माँ उस बच्चे से कहती है कि यदि तू पड़ौसी के घर गया तो मैं तेरी टाँगे तोड़ दूँगी; लेकिन उसकी माँ का भाव पड़ौसी के घर जाने से रोकने का रंचमात्रा भी नहीं है। वह तो यह चाहती है कि उसका लड़का कोई ऐसा काम न करे, जिससे उसे उलाहना सुनना पड़े।

उस माँ ने भी उस बालक को पहले शिक्षा तो यही दी थी कि किसी के यहाँ ऊधम नहीं करते हैं, लड़ते–झगड़ते नहीं हैं, बिना माँगे किसी चीज को हाथ नहीं लगाते हैं; किन्तु उस बालक ने ये बातें नहीं मानीं, तब माँ ने पड़ौसी के घर जाने का निषेध किया। वास्तव में तो पड़ौसी के यहाँ ऊधम करने का निषेध है, लेकिन उस माँ को यह संभव नहीं दिखा, इसलिए उसने वहाँ जाने का निषेध किया।

उसीप्रकार यह आत्मा भी परपदार्थों को बार–बार जानता है और एकत्व–ममत्वरूपी ऊधम करता है; तब श्रद्धा में, चारित्रा में विकृति उत्पन्न हो जाती है और उस विकृति का निषेध करने के लिए कभी–कभी जानने का भी निषेध कर दिया जाता है, वास्तव में वह ज्ञेयों के जानने का निषेध तो है ही नहीं।

उस बालक की तरह कई जबान या बूढ़े लोग भी होते हैं, जो झगड़ा या तोड़–फोड़ किए बगैर रहते ही नहीं है। उन लोगों के लिए मैं हमेशा कहता हूँ कि ये लोग या तो नरक गति से आए हैं या नरकगति में जाने की तैयारी में हैं, क्योंकि उनका बचपन यह बताता है कि वे कहाँ से आए हैं और उनका बुढ़ापा यह बताता है कि उन्हें कहाँ जाना है।

उपर्युक्त समस्त कथन का सार यही है कि विकृति के निषेध के लिए जानने का निषेध किया जाता है, वास्तव में ज्ञान का जो जानना स्वभाव है, उसका निषेध नहीं किया जाता है।

इसप्रकार यहाँ ज्ञाता–ज्ञेय से संबंधित वह प्रथम बिन्दु समाप्त होता है, जिसमें यह कहा था कि ज्ञाता–ज्ञेय संबंध के निषेध करने के बहाने कभी ज्ञानस्वभाव का निषेध नहीं करना।

जानने के निषेध के भी दो अर्थ होते हैं – पहला यह कि परपदार्थों को मत जानो, मात्र अपनी आत्मा को जानो – यह चरणानुयोग की भाषा अर्थात् उपदेश की भाषा का निषेध है। और आत्मा पर को जानता ही नहीं है – यह द्रव्यानुयोग की भाषा अर्थात् तत्त्वज्ञान की भाषा का निषेध है।

अपनी आत्मा का कल्याण करना है तो मात्रा अपनी आत्मा को जानो, परपदार्थों को मत जानो – यह उपदेश की भाषा है। यह तत्त्व की निरूपक भाषा नहीं है। तत्त्वज्ञान की भाषा का जो निषेध है, वह जिनागम में इष्ट नहीं है। उपदेशी भाषा के आधार पर तत्त्वज्ञान का निरूपण करना यह भी उचित नहीं है और तत्त्वज्ञान की भाषा को उपदेश की भाषा समझना, यह भी उचित नहीं है।

इसप्रकार यहाँ कहा कि जानना आत्मा का स्वभाव है और यह आत्मा स्व–परप्रकाशक है। सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के अंत में आत्मख्याति टीका में अमृतचन्द्राचार्य ने 47 शक्तियों का वर्णन किया है, उनमें एक सर्वज्ञत्वशक्ति है, जिसका अर्थ है सबको जानना; एक सर्वदर्शित्व शक्ति है, जिसका अर्थ है सभी को देखना तथा स्व– पर–प्रकाशक आदि अनेक शक्तियों का वर्णन है और ये समस्त शक्तियाँ आत्मा का स्वभाव है, विभाव नहीं।

इसप्रकार जब यह सिद्ध हो चुका कि जानना तो आत्मा का स्वभाव है, तब फिर प्रश्न हुआ कि पर को जानना आत्मा का स्वभाव है या विभाव ? तो कहा कि आत्मा और परपदार्थ दोनों को ही जानना आत्मा का स्वभाव है और दोनों को जानने की प्रक्रिया भी एक–सी ही है।

यहाँ कोई ऐसा नहीं कह सकता कि पर तो आत्मा में झलक जाते हैं और आत्मा अपने को जानता है। यदि झलकने की बात है तो स्व भी झलकेगा ही। यदि प्रयत्नपूर्वक जानने की बात है तो दोनों को प्रयत्नपूर्वक ही जाना जाता है।

भगवान आत्मा भी इसतरह के विकल्पों से जानने में नहीं

आता है कि मैं आत्मा को जानूँ या पर से उपयोग को समेटकर आत्मा में ले जाऊँ। वह भगवान आत्मा भी आत्मा की रुचि से सहज ही ज्ञान का ज्ञेय बनता है।

इसके बाद सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के अंत में प्रतिक्रमण आदि की चर्चा है। दिगम्बर समाज में आलोचना का ज्यादा प्रचलन है, जबकि श्वेताम्बर समाज में प्रतिक्रमण करने का रिवाज ज्यादा है। लेकिन आगम में प्रतिक्रमण, आलोचना और प्रत्याख्यान – इन तीनों का एक साथ ही वर्णन आता है। यह अलग बात है कि दिगम्बर समाज में आलोचना को महत्त्व दिया और श्वेताम्बर समाज ने प्रतिक्रमण को।

वास्तव में ये तीनों वर्तमान में ही होते हैं, किन्तु एक (आलोचना) में विगत अपराधों के पश्चाताप का चिंतन है, दूसरे (प्रतिक्रमण) में वर्तमान के अपराधों के पश्चाताप का चिंतन है और भविष्य में अपराध नहीं करने के संकल्प का नाम प्रत्याख्यान है। यथार्थ में भूत, भविष्यत्, वर्तमान तो ज्ञेय के रूप में आते हैं और जो चिंतन कर रहा है, वह तो वर्तमान में ही है।

इस समयसार ग्रन्थाधिराज में प्रतिक्रमण, आलोचना और प्रत्याख्यान का जो वर्णन है, वह बहुत ही अद्‌भुत है।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं –

रागजन्मनि निमित्ततां परद्रव्यमेव कलयंति ये तु ते।
उत्तरंति न हि मोहवाहिनीं शुद्धबोधविधुरांधबुद्धयः।।221।।

जो राग की उत्पत्ति में परद्रव्य का ही निमित्त मानते हैं, वे शुद्धज्ञान से रहित बुद्धिवाले अंधे लोग हैं और वे मोहनदी को पार नहीं कर सकते। अर्थात् जो अपनी गलती स्वीकार नहीं करते हैं और राग का कर्ता अपने को नहीं मानते हैं, बस यही कहते हैं कि राग तो कर्म के उदय ने किया है; वे सभी मिथ्यादृष्टि हैं, अन्धे हैं और उन्हें कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं होगा।

यदि राग का कर्ता आत्मा को नहीं माना जाय तो प्रत्याख्यान, प्रतिक्रमण और आलोचना का क्या अर्थ रह जाता है अर्थात् जब गलती की ही नहीं तो माफी माँगने का क्या अर्थ है?

ज्ञानी भी अपने जीवन में किसी न किसी नय से यह स्वीकार करते ही हैं कि मेरे जीवन में गलती हुई है। यदि वे ऐसा नहीं माने तो वे भी सांख्य के समान हो जायेंगे।

प्रतिक्रमण, आलोचना और प्रत्याख्यान अपनी गलती स्वीकारने का ही नाम है और ऐसा करने से हमारी गल्तियाँ निकल जाती हैं। इसलिए पहले अप्रतिक्रमणादि को विषकुंभ और भूत–भविष्यत्–वर्तमान की गल्तियों की माफी माँगने को अर्थात् प्रतिक्रमणादि को अमृतकुंभ कहा था।

बाद में प्रतिक्रमणादि को विषकुंभ और अप्रतिक्रमणादि को अमृत– कुंभ भी कहा। अन्त में यह भी लिखते हैं कि माफी माँगना अर्थात् प्रतिक्रमण जहाँ विषकुंभ है, वहाँ अप्रतिक्रमण अमृतकुंभ कैसे हो सकता है ?

इसी संदर्भ में आचार्य 189 कलश के पूर्वार्द्ध में कहते हैं कि–

यत्र प्रतिक्रमणमेव विषं प्रणीतं।
तत्राप्रतिक्रमणमेव सुधा कुतः स्यात्।।

जहाँ प्रतिक्रमण को ही विष कहा जाता है, वहाँ अप्रतिक्रमण अमृत कहाँ से हो सकता है ?

उक्त सम्पूर्ण प्रतिपादन के पीछे आचार्यदेव का स्पष्ट चिंतन यह है कि यदि अपराध हमारे जीवन में हुआ है, तब तो अपराध का परिमार्जन अर्थात् प्रतिक्रमण अमृत ही है; लेकिन उससे अच्छा तो यही है कि अपराध हमारे जीवन में हो ही नहीं, अर्थात् ऐसा मौका ही क्यों आए कि हमें माफी माँगनी पड़े।

अपराध होने के बाद माफी नहीं माँगना तो सबसे बड़ा अपराध है ही, लेकिन माफी माँगना भी कोई निरपराध दशा तो नहीं है अर्थात् माफी माँगना भी अपराध का ही सूचक है।

ऐसा कहकर आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि यदि तुम अपने त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा में अपना उपयोग लगाओगे तो न प्रतिक्रमण की जरूरत पड़ेगी और न अप्रतिक्रमण की। प्रतिक्रमण और अप्रतिक्रमण के विकल्पों से पार हो जाओगे। लेकिन यदि अपनी आत्मा से अपने उपयोग को निकाला, तो बाहर खतरा ही खतरा है।

उपयोग को बाहर निकालने का तात्पर्य पर को जानना नहीं है; क्योंकि स्व और पर – दोनों को जानना तो आत्मा का स्वभाव है। पर में राग करना, पर में एकत्व स्थापित करना – इसी का नाम उपयोग को बाहर निकालना है। इसी उपयोग को बाहर निकालने का नाम ही अपराध है।

अपराध के संबंध में आचार्य जयसेन ने मोक्ष अधिकार में स्पष्ट किया है कि जो अपने को अपराधी समझता है, वह डरता है और जो निरपराधी है, वह डरता नहीं है।

चोरों को पुलिस का डर रहता है और जिनके पास चोरी का माल होता है, उन्हें चोरों का डर रहता है। चोरी के माल से तात्पर्य उस माल से है, जिसको चुराया जा सकता है। जैसे – विद्या चुराई नहीं जा सकती; अतः विद्या असली माल है। जिस माल में चोरी हो जाने की योग्यता हो, वह चोरी का माल है। इसलिए चोरी के माल के चोरी हो जाने का भय रहता है।

यदि कोई कहे कि माल चोरी न हो – इसका कोई उपाय है? उससे कहते हैं कि इसका एक ही उपाय है कि इस चोरी के माल में अपना एकत्व–ममत्व छोड़ दो और यह समझ लो कि जबतक मेरे पुण्य का उदय है, तभी तक ये संयोग रहनेवाले हैं।

(क्रमशः)

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठीय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/- रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) से प्राप्त की जा सकती है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा विरचित तीर्थंकर स्तवन क्रमश: यहाँ दिया जा रहा है ह्न

तीर्थंकर-स्तवन

जो मैं वह परमातमा, जो जिन सो मम रूप।
चिदानन्द चैतन्यमय, सत् शिव शुद्ध स्वरूप।।

1. श्री आदिनाथ स्तवन

सकल कर्म जिनने धो डाले, वे हैं आदिनाथ भगवान।
लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।।
तीर्थंकर पद के धारक प्रभु ! दिया जगत को तत्त्वज्ञान।
दिव्यध्वनि द्वारा दर्शाया, प्रभुवर ! तुमने वस्तु-विज्ञान।।

2. श्री अजितनाथ स्तवन

अनन्तधर्ममय मूलवस्तु है, अनेकान्त सिद्धान्त महान।
वाचक-वाच्य नियोग के कारण, स्याद्वाद से किया बखान।।
आचार अहिंसामय अपनाकर, निर्भय किए मृत्यु भयवान।
परिग्रह संग्रह पाप बताकर, अजित किया जग का कल्याण।।

3. श्री संभवनाथ स्तवन

जिनका केवलज्ञान सर्वगत, लोकालोक प्रकाशक है।
जिनका दर्शन भव्यजनों को, निज अनुभूति प्रकाशक है।।
जिनकी दिव्यध्वनि भविजन को, स्व-पर भेद परिचायक है।
उन जिनवर संभवनाथ प्रभु को, नमन हमारा शत-शत है।।

ह्न यह 'तीर्थंकर स्तवन' पुस्तक रूप में भी उपलब्ध है।

विधान एवं शिविर सानन्द सम्पन्न

वाशिम (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जवाहर कॉलोनी में दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2003 तक पाटनी परिवार वाशिम द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण शिविर तथा झांझरी परिवार की ओर से 24 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विधान की सम्पूर्ण प्रक्रिया पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा सम्पन्न हुई तथा दोपहर में आपके द्वारा शंका-समाधान एवं रात्रि में आत्मानुभूति की प्रक्रिया विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

इसी प्रसंग पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में आपके द्वारा परमभावप्रकाशकनयचक्र की कक्षा ली गई।

प्रतिदिन सायंकाल बालकक्षा के उपरान्त जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इन्द्रसभा का विशेष आयोजन किया गया। शिविर के दौरान ही पाठशाला निरीक्षण के लिये पधारे पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे द्वारा पाठशाला का पुनर्गठन किया गया।

विधान के उपलक्ष में झांझरी परिवार की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं नागपुर ट्रस्ट को कुल 16 हजार रुपये की दान राशी प्रदान की गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम में स्थानीय एवं बाहर गाँव से पधारे लगभग 500 लोगों ने लाभ लिया। **– संतोष पाटनी**

आगामी कार्यक्रम....

महाराष्ट्र प्रान्तीय विद्वत्सम्मेलन की तिथि निश्चित

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग के अन्तर्गत महाराष्ट्र प्रान्त में तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों के क्रियान्वयन की योजनाबाबत अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर ने समाज व विद्वानों से सहयोग हेतु निवेदन किया था, जो पूर्व में जैनपथप्रदर्शक (दिसम्बर,द्वितीय) अंक में प्रकाशित हो चुकी है।

अब इस योजना के सुचारू संचालन हेतु **दिनांक 14 एवं 15 फरवरी, 2004** को महाराष्ट्र के सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों का एक सम्मेलन **श्री महावीर ब्रम्हचर्याश्रम , कारंजा (लाड)** में आयोजित किया जा रहा है।

अत: महाराष्ट्र के सक्रिय कार्यकत्ताओं एवं विद्वानों से अनुरोध है कि इस सर्वश्रेष्ठ कार्य में अवश्य भाग लेकर अपने सुझावों से हमें परिचित कराये। आपके भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। आपसे निवेदन है कि दिनांक 13 फरवरी की रात्रि तक आप कारंजा(लाड) अवश्य पहुँचे तथा अपने आने की पूर्वसूचना अवश्य दे।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर एवं पण्डित धन्यकुमारजी भोरे, कारंजा करेंगे तथा कार्यक्रम का संचालन पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री, पण्डित नंदकिशोरजी मांगूलकर, काटोल एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवरवाले, नागपुर करेंगे।

निवेदक : विश्वलोचनकुमार जैनी हीरा कुटीर, मस्कासाथ, नागपुर (महा) फोन : (0712) 2762624, मो. 94221-46642

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 से 23 जनवरी, 04	छिंदवाड़ा	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
02 से 06 फरवरी, 04	अलीगढ़	आध्यात्मिक शिक्षण शिविर
07 से 11 फरवरी, 04	इन्दौर	आध्यात्मिक शिविर एवं विधान
14 से 16 फरवरी, 04	जयपुर	विद्वत संगोष्ठी(राज. विश्वविद्या.)

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जनवरी (द्वितीय) 2004

J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि. राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127